ध्वनि जागरूकता, डिकोडिंग और लेखन

गतिविधि और चर्चा

आप बोले गए शब्द (वांगमय) को क्यों लिख पाए ?

ध्वनि जागरूकता क्या है और यह क्यों महत्त्वपूर्ण है ?

“ ध्वनि जागरूकता शब्दों/वाक्यों में ध्वनियों को सुनने, पहचानने और उनमें बदलाव कर पाने की क्षमता को कहते हैं। “

- ध्वनि जागरूकता बच्चों के लिए ध्वनियों को वर्णों (प्रतीकों) से जोड़ना सीखने को आसान बना देती है |
- ध्वनियों को मिलाकर शब्द बना देने की योग्यता पर बच्चों का पढ़ना निर्भर करता है |
- बच्चे जब समझने लगते हैं कि शब्द छोटी-छोटी ध्वनियों से बनें हैं अर्थात शब्दों को छोटे छोटे ध्वनियों में तोड़ा जा सकता है अथवा ध्वनियों को मिलाकर शब्द बनाए जा सकते हैं तो इससे लिखित अक्षरों को जोड़कर पढ़ने और लिखने में मदद मिलती है।
- चूंकि ध्वनि जागरूकता बोली जाने वाली ध्वनियों के बारे में जागरूकता है। इसलिए ध्वनि जागरूकता के लिए गतिविधियाँ मौखिक रूप से की जाती हैं।
- बच्चों के साथ ध्वनि जागरूकता गतिविधि करते समय ध्वनियों को साफ- साफ और सही- सही तरीके से उच्चारित करना ज़रूरी है |

किताब – कि/ता/ब
मौसी – मौ/सी
नमक – न/म/क

इसे कक्षा में संचालित करने के कुछ उदाहरण...

प्रथम ध्वनि की पहचान	ध्वनियों को जोड़ना (ब्लेंडिंग)	ध्वनियों को तोड़ना (सेग्मेंटिंग)
1. कोई भी शब्द बोलें और उसमें से प्रथम ध्वनि अलग से उच्चारित करके बताएँ। जैसे शब्द है /घर/ और इसकी पहली आवाज है /घ/ 2. शिक्षक पहले इसे खुद करके बच्चों को बताएं। उसके बाद बच्चों को अपने साथ मिलकर पहचान करने का मौका दें। 3. बच्चों को स्वयं से करके देखने का अवसर भी प्रदान करें।	1. अलग-अलग ध्वनियों को जोड़कर पुनः शब्द बनाने का कौशल। जैसे- /र/ /थ/ - 'रथ' 2. यह कौशल बच्चे को लिखें हुए शब्द को एक साथ पूरा पढ़ पाने में मदद करता है।	1. यह किसी शब्द को तोड़कर उसमें शामिल ध्वनियों की पहचान कर पाने का कौशल है। जैसे- 'रथ'-/र/, /थ/ 2. इससे बच्चे समझ पाते हैं कि शब्द ध्वनियों से बना होता है। शब्दों को ध्वनियों में अलग करने का यह कौशल शब्द को लिख पाने में मदद करता है।

ध्वनि संबंधी जागरूकता के लिए और भी प्रभावी गतिविधियाँ क्या हो सकती हैं? आप भी कुछ और गतिविधियाँ सोचें और उन्हें शिक्षण अधिगम प्रक्रिया में सम्मिलित करें।

भाषा सीखने के क्रम में बच्चे भाषा को समग्रता में ग्रहण करते हैं न कि टुकड़ों में। इसे इस तरह से भी कहा जा सकता है कि भाषा से जुड़े उनके अनुभव पूरे-पूरे शब्दों के रूप में होते हैं। क्योंकि इसी रूप में वे भाषा को सुनते, समझते और फिर स्वयं को अभिव्यक्त भी करते हैं। वहीं जब हम लिखित भाषा की संरचना को देखते हैं तो यह स्पष्ट हो जाता है कि लिखित भाषा में शब्द विभिन्न ध्वनियों के प्रतीकों के गठजोड़ से बनते हैं, जो लिपि चिह्न हैं। अतः पढ़ने और लिखने के कौशलों को समझने के लिए यह आवश्यक है कि बच्चे भाषा की विभिन्न ध्वनियों, उनके प्रतीकों और इनके परस्पर संबंध को समझें।

ध्वनि जागरूकता की कुछ और गतिविधियाँ...

गतिविधि	उदाहरण
तुकांत शब्द पहचानना	हम कविताओं से तुकबंदी वाले शब्दों की पहचान कर सकते हैं जैसे-आई खाई लाई
प्रथम ध्वनि पहचान	शब्द 'कमल' में पहली ध्वनि /क/ की पहचान करना
असमान ध्वनि वाले शब्द की पहचान	हम दिए गए शब्दों में असमान ध्वनि वाले शब्द की पहचान कर सकते हैं– काला माला केला
ध्वनियों की संख्या गिनना	हम दिए गए शब्दों में ध्वनि इकाई की संख्या गिन सकते हैं। शब्द मकान में तीन ध्वनि इकाई है – म/का/न
किसी शब्द को उसकी ध्वनि इकाई में तोड़ना	हम शब्द 'मकान' को तीन ध्वनि इकाइयों में तोड़ सकते हैं– म/का/न
ध्वनि इकाई को मिलाकर शब्द बनाना	हम शब्द बनाने के लिए दी गई तीन ध्वनियाँ म/का/न को जोड़ सकते हैं– मकान
शब्द से ध्वनि इकाई हटाकर	हम दिए गए शब्द से ध्वनि इकाई 'म' को हटा सकते हैं– 'मकान' अब यह हो जायगा - कान
शब्द में ध्वनि इकाई जोड़ना	हम यदि शब्द 'मना' में ध्वनि इकाई 'ली' जोड़ दें तो शब्द बन जाएगा - मनाली

समेकन...

- **<u>इस कौशल के विकास में उपलब्ध ABL किट से सामग्री जैसे वर्ण चार्ट, फ्लेश कार्ड, स्टेंसिल, वर्ण चकरी आदि और साथी, पहल कार्यपुस्तिका के अभ्यास पृष्ठों का उपयोग विभिन्न गतिविधियों के दौरान किया जा सकता है |</u>**
- ध्वनि जागरूकता यह समझ पाने की क्षमता है कि बोले जाने वाले शब्दों में विभिन्न ध्वनियों का समावेश है तथा शब्द विभिन्न ध्वनियों के जोड़ से बनते हैं
- ध्वनियों को पहचानना और ध्वनियों के आपस में मिलने से होने वाले बदलाव को समझ पाना ही ध्वनि जागरूकता है |
- पढ़ने और लिखने के दृष्टिकोण से सबसे महत्वपूर्ण ध्वनि जागरूकता शब्दों को ध्वनि इकाई में तोड़ पाना और अलग -अलग ध्वनि इकाई को मिलाकर शब्द बना पाना है |
- ध्वनि जागरूकता खासकर ध्वनियों को तोड़ना और जोड़ना बेहतर पढ़ने और लिखने में बहुत ही मददगार होता है
- जब बच्चा पढ़ने की कोशिश करता है तब वह अपने इस कौशल का उपयोग करे तो शब्दों को डिकोड करना आसान हो जाता है
- ध्वनि जागरूकता के लिए विभिन्न तरह की गतिविधियाँ बहुत ही उपयोगी हैं जैसे - शब्द की पहली ध्वनि पहचानना, शब्द में ध्वनियों की संख्या गिनना, शब्दों को ध्वनियों में तोड़ना और जोड़ना आदि |

डिकोडिंग

आईये एक गतिविधि करते हैं -

क्या आप इसे पढने की कोशिश कर सकते हैं ?

ఎక్ ధా హాథి . ఉసకి థి లంబి సుంధ్ ఔర్ చౌదె కాన్ ఉసకి ఎక్ దొస్త్ థి బకరి. దొనొ సాథ్ సాథ్ జంగల్ మె జాతె.

डिकोडिंग

आईये एक गतिविधि करते हैं -

क्या आप इसे पढने की कोशिश कर सकते हैं ?

ఎక్ ధా హాథి . ఉసకి థి లంబి సుంధ్ ఔర్ చౌదె కాన్ ఉసకి ఎక్ దొస్త్ థి బకరి. దొనొ సాథ్ సాథ్ జంగల్ మె జాతె.

ओका येनुगु उन्नदी । दानिकि पोड़वाइना तोंडमु मरियू वेडल्पाइना चेवुलु वुन्नायी । दानिकी मेका अने ओका स्नेहितुरालु वुन्नदी ।

डिकोडिंग

आईये एक गतिविधि करते हैं -

क्या आप इसे पढने की कोशिश कर सकते हैं ?

ఎక్ ధా హాథి . ఉసకి థి లంబి సుంధ్ ఔర్ చౌదె కాన్ ఉసకి ఎక్ దొస్త్ థి బకరి. దొనొ సాథ్ సాథ్ జంగల్ మె జాతె.

ओका येनुगु उन्नदी । दानिकि पोड़वाइना तोंडमु मरियू वेडल्पाइना चेवुलु वुन्नायी । दानिकी मेका अने ओका स्नेहितुरालु वुन्नदी ।

एक था हाथी। उसकी थी लम्बी सूंड और चौडे कान । उसकी एक दोस्त थी बकरी।

ध्वनि और प्रतीक के अंतर्संबंध को समझना - डिकोडिंग

डिकोडिंग से आशय ध्वनि और उसके चिह्नों के संबंधों को समझते हुए, लिखित शब्दों, वाक्यों को समझ के साथ पढ़ पाने का कौशल विकसित करना है ।

- इसके माध्यम से बच्चे अक्षर, शब्द, वाक्य को पढ़ना और लिखना सीखते हैं और अंत में धाराप्रवाह के साथ लिखित सामग्री को पढ़ते हैं इससे बच्चे अपरिचित शब्दों को भी आसानी से पढ़ना सीख पाते हैं ।
- डिकोडिंग में निम्नलिखित दक्षताएँ शामिल हैं **<u>लेकिन ध्यान रहे कि बिना भाषा जाने हम शब्दों के अर्थ नहीं समझ सकते हैं ।</u>**

- ❖ वर्ण पहचान एवं लेखन
- ❖ मात्रा पहचान एवं लेखन
- ❖ चित्र पहचान कर प्रथम वर्ण से मिलान करना
- ❖ व्यंजन-स्वर यानी सीवी संयोजन को पढ़ना एवं लिखना
- ❖ अक्षरों को मिलाकर शब्द बनाना, पढ़ना और लिखना
- ❖ शब्द एवं वाक्य पठन एवं लेखन

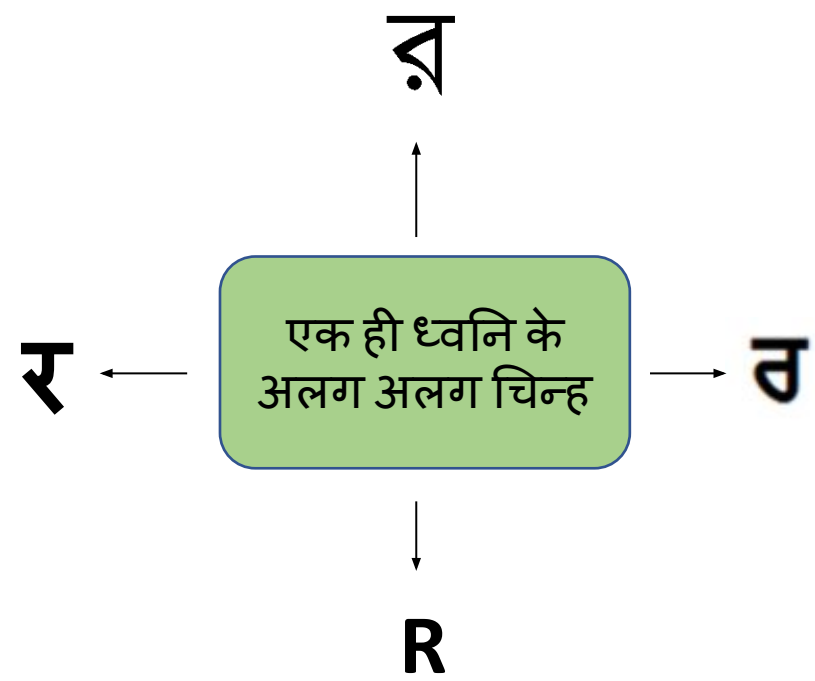

ध्वनि और प्रतीक के अंतर्संबंध को समझना - डिकोडिंग

- **वर्ण - मात्रा पहचान एवं लेखन**
- **मात्रा पहचान एवं लेखन**

- पहले अक्षर पहचान की गतिविधि होगी उसके बाद अक्षर को लिखने और पढ़ने की गतिविधि।
- इसके पहले चित्रों के साथ वर्ण की आवाज़ पहचाने की ध्वनि जागरूकता की गतिविधि हो गई होगी।

पढ़ें और लिखें-

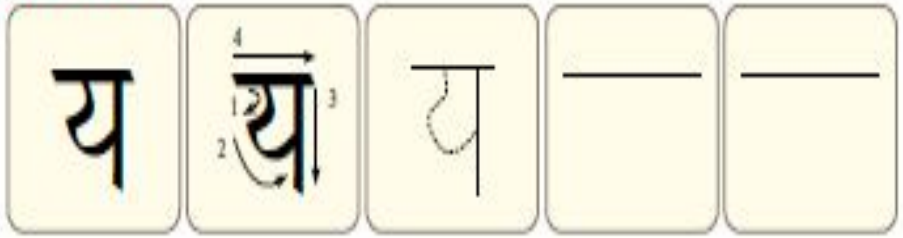

- **चित्र पहचान कर प्रथम वर्ण से मिलान करना**

शिक्षक द्वारा	मिलकर समूह में	व्यतिगत बच्चे द्वारा
'य' का अक्षर कार्ड बच्चों को दिखाएँ और 'य' पर उंगली रखकर कहें, यह 'य' है)	अब आप भी मेरे साथ बोलें 'य' शिक्षक और बच्चे एक साथ बोलते हैं	इसके बाद बच्चों को अक्षर 'य' का कार्ड दिखाएँ और उन्हें पहचान कर अक्षर बताने को कहें।

शिक्षक द्वारा	मिलकर समूह में	व्यतिगत बच्चे द्वारा
बोर्ड पर स्ट्रोक के अनुसार अक्षर 'य' लिखें और यह भी बताएँ कि 'य' कैसे लिखा जाता है।	स्ट्रोक के अनुसार अपनी उँगलियों को घुमाकर बच्चों को 'य' बनाना सिखाएँ। फिर बच्चों के साथ भी अक्षर पर उँगली फेरें।	अब बच्चों को वर्कबुक में अक्षर को लिखने को कहें।

ध्वनि जागरूकता से डिकोडिंग-
https://www.youtube.com/watch?v=yJtr1Rq2-T0
https://www.youtube.com/watch?v=26yuyhakep4&t=39s

ध्वनि और प्रतीक के अंतर्संबंध को समझना - डिकोडिंग

रस्सी रबड़ी

❖ व्यंजन-स्वर यानी सीवी संयोजन को पढ़ना एवं लिखना

- वर्ण पहचान और लेखन सीखने के साथ-साथ बच्चे वर्ण और मात्रा को मिलाकर पढ़ना और लिखना भी सीख सकते हैं। इससे शब्दों की आवाज़ों मिलाकर पढ़ने और लिखने में मदद मिलेगी।

शिक्षक द्वारा	मिलकर समूह में	व्यतिगत बच्चे द्वारा
• दिए गए चित्र के अनुसार ग्रिड बनाएँ और वर्ण और मात्रा पढ़कर बच्चों को सुनाएँ।	• फिर वर्ण और मात्रा को मिलाकर साथ में पढ़ें।	बच्चों को अपने वर्कबुक में दिए गए ग्रिड को पढ़ने और लिखने के लिए कहें।

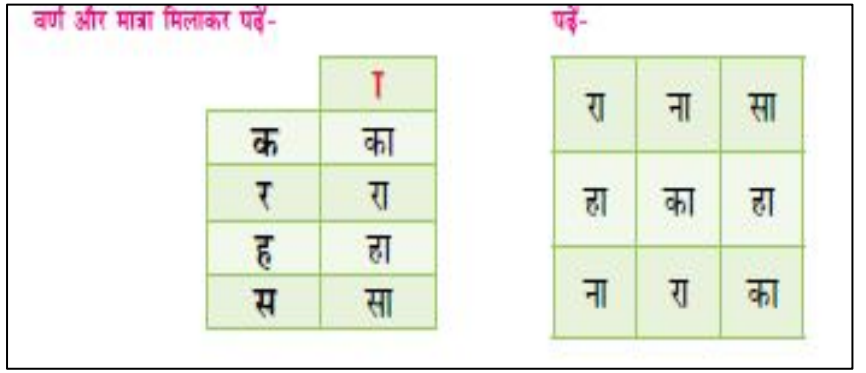

❖ अक्षरों को मिलाकर शब्द बनाना, लिखना और पढ़ना

- लिखित से पहले शब्दों की ध्वनि इकाई को मौखिक रूप से तोड़ने और जोड़ने की गतिविधि कराएँ | फिर बच्चों को लिखित रूप में दिखाएँ | उसके बाद बच्चों को अक्षरों को मिलाकर खुद से लिखने और पढ़ने के लिए कहें |

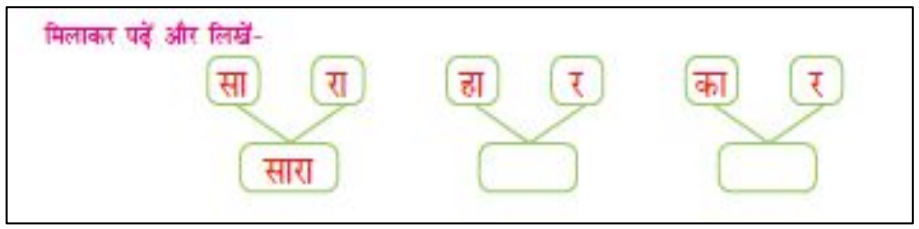

शिक्षक द्वारा	मिलकर समूह में	व्यतिगत बच्चे द्वारा
पहले बच्चों को बताएँ कि मैं दो आवाज़ों को बोलने जा रहा हूँ आप ध्यान से सुनें। दो आवाज़ धीरे-धीरे और अलग-अलग बोलें 'सा' और 'रा' इसके बाद बताएँ जब हम 'सा' और 'रा' को मिलाते हैं तो यह बन जाता है 'सारा'।	• अब आप बच्चों को बोलें कि आपको मेरे साथ आवाज़ों को मिलाना है। • 'सा' और 'रा' • अब शब्द बोलें - 'सारा' • बच्चे और शिक्षक साथ में बोलें।	अब आप बच्चों को बोलें कि आप आवाज़ों को अलग-अलग पढ़ें और इन दोनों आवाज़ों को मिलाकर शब्द बोलें, लिखें और पढ़ें।

ध्वनि और प्रतीक के अंतर्संबंध को समझना - डिकोडिंग

रस्सी रबड़ी

❖ शब्द एवं वाक्य पठन एवं लेखन

- आवाज़ों को मिलाकर शब्द बनाने, लिखने और पढ़ने के साथ-साथ बच्चों को शब्दों और वाक्यों को पढ़ने और लिखने का अभ्यास कक्षा में नियमित होनी चाहिए।

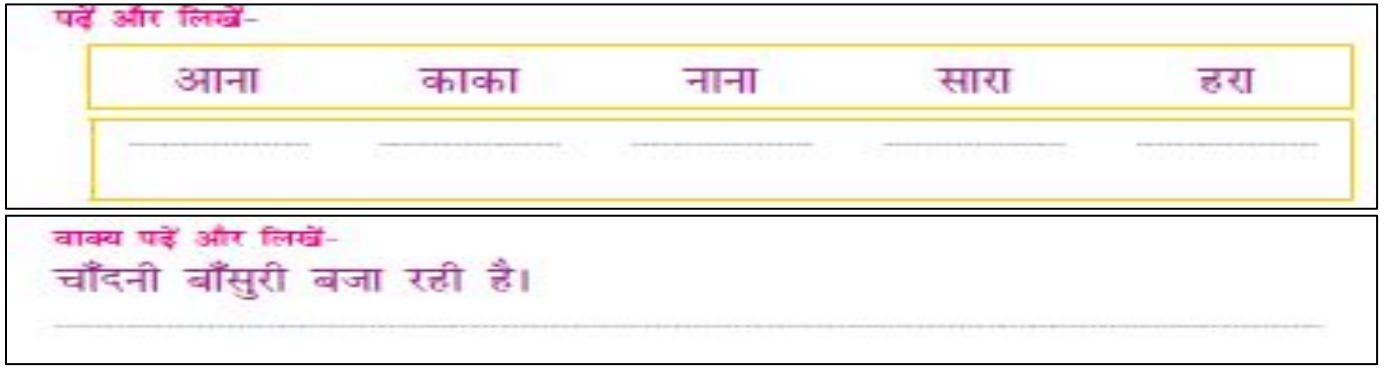

❖ शब्द और वाक्य पढ़ना लिखना सीखने से संबंधित कुछ अतिरिक्त गतिविधियाँ

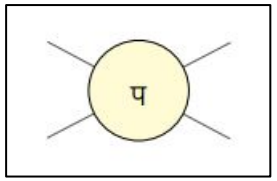

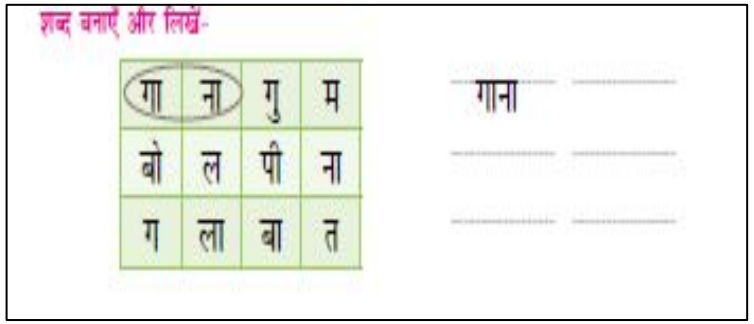

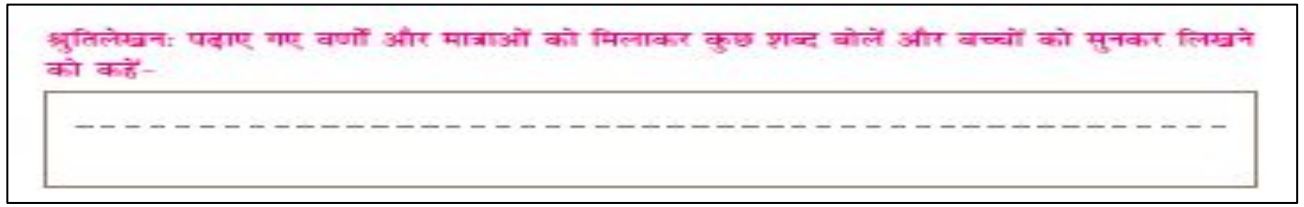

- **गतिविधि – अक्षर से शब्द बनाना** – वर्ण या मात्रा संयोजन दिया जा सकता है। इससे बच्चे शब्द बनाकर लिख और पढ़ सकते हैं।
- **गतिविधि –अक्षर मात्रा कार्ड से शब्द बनाना** – अक्षर मात्रा के संयोजन ग्रिड दी जा सकती है इससे बच्चे अलग-अलग अक्षरों को मिलाकर शब्द बना सकते हैं और लिख सकते हैं।
- **गतिवधि – अक्षरों, शब्दों और मात्राओं को श्रुतलेखन** –जो भी अक्षर पढाए जा रहे हैं उनका तथा उनसे बनने वाले शब्दों, वाक्यों का श्रुतलेख कराया जा सकता है।
- **गतिविधि – शब्दों से वाक्य बनाना या वाक्य के ख़ाली स्थान में शब्द लिखना**– बच्चों को एक शब्द से एक वाक्य बोलकर लिखने और पढ़ने के लिए कहा जा सकता है। बच्चे कुछ शब्दों से भी वाक्य बना सकते हैं या किसी वाक्य के ख़ाली स्थान में शब्द लिखकर वाक्य पूरा कर सकते हैं।

समेकन...

- **<u>इस कौशल के विकास में उपलब्ध ABL किट से सामग्री जैसे वर्ण चार्ट, फ्लेश कार्ड, स्टेंसिल, वर्ण चकरी आदि और साथी, पहल कार्यपुस्तिका के अभ्यास पृष्ठों का उपयोग विभिन्न गतिविधियों के दौरान किया जा सकता है ।</u>**
- पढ़ना लिखना सीखने के लिए लिपि-चिन्हों के संबंधो को समझते हुए उन्हें मिलाकर पढ़ना आना और साथ ही भाषा की समझ होना आवश्यक है |
- ध्वनि चिन्हों के संबंधों को समझकर पढ़ने और लिखने में समय लगता है इसलिए इस पर पर्याप्त व्यवस्थित और स्पष्ट तरीके से शिक्षण अधिगम प्रक्रिया में सम्मलित करने की जरुरत है और इस पर निपुणता हासिल करने लिए पर्याप्त निर्देश, सामग्री, फीडबैक, मॉडलिंग और अभ्यास की जरुरत होती है |
- बच्चों को यह सीखने की जरूरत होती है कि प्रत्येक वर्ण का संबंध किसी खास ध्वनि के साथ होता है |
- जब स्वरों (मात्रा स्वरूप) का इस्तेमाल व्यंजनों के साथ किया जाता है, तब व्यंजन के साथ-साथ ध्वनि भी बदल जाती है, जो कि मात्रा का मुख्य काम है |
- अक्षर मात्रा ग्रिड के अभ्यास के दौरान बच्चे ध्वनि और प्रतीक के आपसी संयोजन संबंधी कौशल को बेहतर बनाते हैं |
- ध्वनि इकाई के तोड़ने और जोड़ने के लिखित अभ्यास से बच्चों को पढ़ने और लिखने में मदद मिलती है |

लेखन

क्या प्रारम्भिक कक्षाओं में बच्चे स्वतंत्र लेखन कर पाते हैं ?

क्या प्रारंभिक कक्षाओं में बच्चे स्वतंत्र लेखन कर पाते हैं ?

कुछ लकीरें

व्यवस्थित बेतरतीब लकीरें

चित्रकारी और अक्षर जैसी उभरती आकृतियाँ

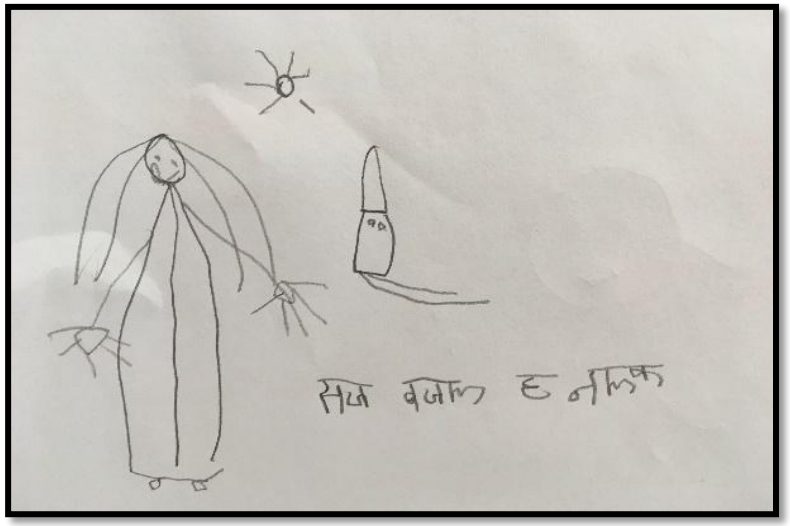

परंपरागत अक्षर और कुछ बनावटी शब्द

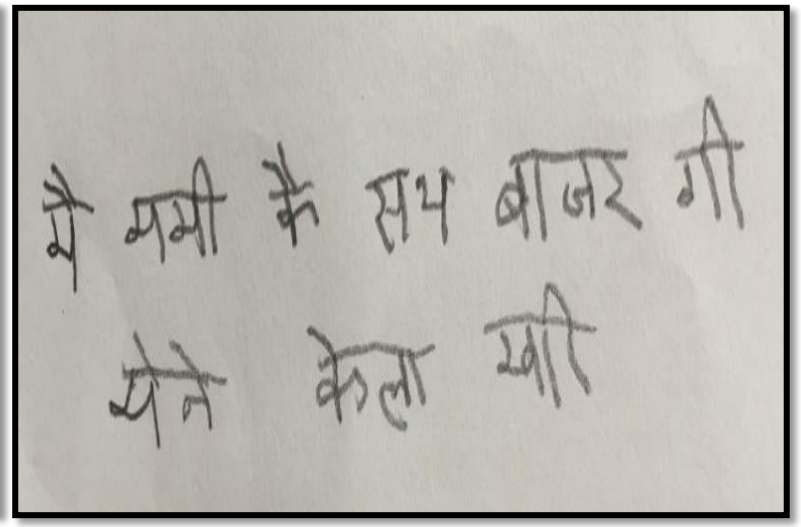

परंपरागत शब्द लिखने का प्रयास

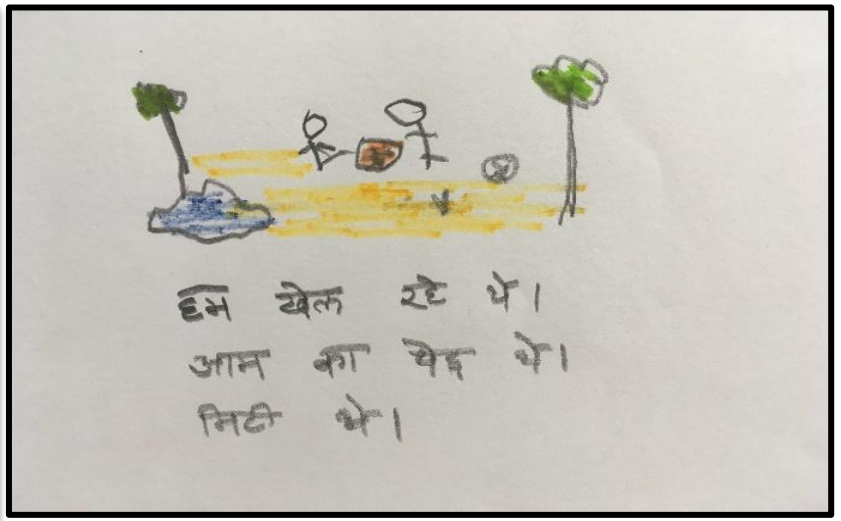

परंपरागत शब्द और सही वर्तनी

लेखन

हाँ यह संभव है !

तो क्या

हमारी कक्षाओं में बच्चों को लेखन के कितने अनुभव मिलते हैं? तात्पर्य यह कि क्या बच्चों को स्वतंत्र अभिव्यक्ति के अवसर मिलते हैं या फिर उन्हें कुछ बंधी-बंधाई पूर्व गतिविधियों के अंतर्गत ही लेखन के अभ्यास के मौके दिए जाते हैं ?

लेखन

- बोलने की ही तरह लेखन भी अभिव्यक्ति एवं सम्प्रेषण का सशक्त माध्यम है।
- इस प्रकार लेखन का मुख्य उद्देश्य तो लिखित रूप में अपने विचार को अभिव्यक्त एवं सम्प्रेषित करना सीखना है |
- हालाँकि लिखित अभिव्यक्ति के लिए जरुरी हैं कि उन सभी दक्षताओं को सीखा जाए जिससे किसी मौखिक भाषा को लिखित रूप में लिखा जाता है, जैसे - अक्षर प्रतीकों को सही तरीके से बनाना, अक्षरों को मिलाकर शब्दों एवं वाक्यों को लिखना आदि |
- किसी पढ़े गए लेख या कहानी के प्रतिउत्तर में भी लेखन कार्य किया जाता है |

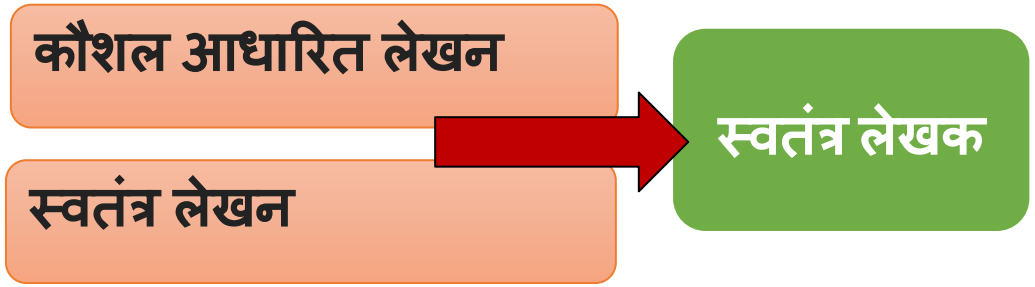

<u>लेखन में शामिल है-</u>

- कौशल आधारित लेखन जैसे अक्षरों की बनावट, लिखने का तरीका एवं अक्षरों को जोड़कर शब्द, वाक्य बना पाना आदि |
- मौलिक या स्वतंत्र लेखन जिसमें बच्चे अपने विचारों को स्वतंत्रतापूर्वक लिखकर व्यक्त करते हैं.

"उपरोक्त दोनों लेखन कौशलों में किसी प्रकार का क्रम नहीं है बल्कि ये एक साथ चलने वाली प्रक्रिया है |"

लेखन – स्वतंत्र लेखन

प्रारंभिक कक्षाओं में स्वतंत्र लेखन का

- बच्चों को यह महसूस होना चाहिए की लेखन एक अर्थपूर्ण प्रक्रिया है
- मौखिक भाषा की ही तरह लेखन का मुख्य उद्देश्य स्वयं को लिखित रूप में अभिव्यक्त करना एवं संप्रेषित करना है |
- यदि प्रारंभ से ही इस पर कार्य किया जाए तो बच्चे यह समझ सकते हैं कि मौखिक अभिव्यक्ति के अलावा लिखित रूप में भी विचारों को अभिव्यक्ति की जा सकती है।
- हालाँकि शुरुआत में बच्चे निर्धारित वर्तनी का प्रयोग न कर पाएं लेकिन अपनी खुद की वर्तनी और चित्रों के माध्यम से अपने विचारों को अभिव्यक्त अवश्य करते हैं और धीरे-धीरे चिन्हों का उपयोग कर लिखना सीख जाते हैं।
- इससे बच्चे लेखन को अभिव्यक्ति एवं संप्रेषण के माध्यम के तौर पर एक कौशल के रूप में उपयोग कर पाते हैं।
- यह स्वतंत्र लेखन है, इसमें बच्चों की लेखन अभिव्यक्ति को बेहतर बनाना मुख्य उद्देश्य है ना कि उनकी वर्तनी ठीक करना। वर्तनी भी महत्वपूर्ण है लेकिन इसका सुधार कौशल आधारित लेखन के समय केन्द्रित होगा।
- स्वतंत्र लेखन की कठिनाई को धीरे धीरे बढ़ाया जा सकता है अर्थात बच्चे पहले चित्र बनाकर अभिव्यक्त कर सकते हैं, फिर चित्र बनाकर उनके नाम, फिर चित्र बनाकर उसके बारे में शब्द या वाक्य लिख सकते हैं|

प्रारंभिक कक्षाओं में स्वतंत्र लेखन विकसित कैसे करें ?

- मौखिक चर्चाओं से जोड़ते हुए |
- पठन से जोड़ते हुए |
- शब्द भण्डार से जोड़ते हुए |
- विभिन्न लेखन शैलियों से जोड़ते हुए |
- प्रिंटरिच वातावरण का निर्माण व उसपर चर्चा द्वारा |
- उपरोक्त चर्चा के द्वारा स्वतंत्र लेखन में विभिन्न तरह के लेखन कार्य कराए जा सकते हैं जैसे -
  - अपने पसंद ना पसंद को बताना - चित्र या शब्द में
  - अपने बारे में बताना
  - अपने अनुभवों को लिखना -
  - सूची बनाना
  - किसी वस्तु या चित्र के बारे में बताना
  - किसी विषय के बारे में बताना
  - कोई कल्पना करके लिखना, आदि

" स्वतंत्र लेखन की क्षमता विकसित करने के लिए यह आवश्यक है कि बच्चों को ऐसे ढेरों मौके दिए जाएँ "

लेखन – कौशल आधारित लेखन

प्रारंभिक कक्षाओं में कौशल लेखन का उद्देश्य

बच्चे सही वर्तनी के साथ अपने विचारों या चाहे गए प्रतिउत्तरों को लिखित रूप से अभिव्यक्त कर सकें |

प्रारंभिक कक्षाओं में कौशल लेखन विकसित कैसे करें ?

इसमें वे सभी कौशल सम्मिलित हैं जो किसी भाषा को लिखित रूप में लिखने के लिए जरुरी हैं , इसके लिए कक्षा में निम्न गतिविधियाँ करवाई की जा सकती हैं-

1. **लेखन पूर्व अभ्यास** – पेंसिल पकड़ने और संतुलन के लिए विभिन्न तरह की गतिविधियाँ करना जैसे - मिट्टी, कागज की गोलियाँ बनाना आड़ी-तिरछी, गोल चौकोर रेखाएँ खींचना, आकार के अंदर बाहर रंग भरना |

2. **वर्ण ज्ञान संबंधी लेखन गतिविधि** - इसमें सही-सही लिपि चिन्हों का प्रयोग करते हुए अक्षरों और मात्राओं को पढ़ना और लिखना, शब्दों एव वाक्यों को पढ़ना और लिखना सम्मलित है -
   - अक्षर पहचानना और लिखना
   - शब्दों को पहचानना और लिखना
   - वाक्यों को पढ़ना और लिखना
   - कहानी से संबंधित समझ को लिखित में व्यक्त करना जिसमें प्रश्न उत्तर सम्मलित है

2. **श्रुतिलेखन**- सुनकर सही-सही लिखने की दक्षता ही श्रुतिलेख है। यह सही-सही लिखने में मदद तो करता ही है, साथ में वर्णों, मात्राओं, शब्दों, वाक्यों इत्यादि के ध्वनि और लिपि के सबंध को समझने और लिखने में भी मदद करता है

(कौशल आधारित लेखन की गतिविधियाँ पर चर्चा हम डीकोडिंग वाले भाग में कर चुके हैं)

समेकन...

- **इस कौशल के विकास में उपलब्ध ABL किट से सामग्री जैसे वर्ण चार्ट, फ्लेश कार्ड, स्टेंसिल, वर्ण चकरी आदि और साथी, पहल कार्यपुस्तिका के अभ्यास पृष्ठों का उपयोग विभिन्न गतिविधियों के दौरान किया जा सकता है ।**
- लिखना अपनी सोची या समझी हुई बात को कहने का एक तरीका है, अभिव्यक्ति का एक माध्यम है।
- शुरूआती समय में बच्चों को लेखन के लिए कलम चलाना या अपने तरीके से लिखने या चित्र बनाने के लिए प्रेरित करना, लेखन का पहला और महत्वपूर्ण चरण है। इससे बच्चे समझने लगते हैं कि लेखन के जरिये भी अपनी सोच और विचा
- बच्चे यह समझ पाएं कि वे जो बातें करते हैं, उन्हें लिखा भी जा सकता है, कि जिस तरह बोलकर अपनी बात कही जा सकती है उसी तरह लिखकर भी अपनी बात कही जा सकती है।
- लेखन कौशल पर वर्तनी और शुद्धता पर ध्यान दिया जाना चाहिए एवं स्वतंत्र लेखन में केवल बच्चे की लेखन अभिव्यक्ति पर ध्यान केन्द्रित करना चाहिए।
- कक्षा में मौखिक बातचीत एवं पठन गतिविधि को लेखन से जोड़ें। ताकि बच्चे देख पाएँ कि ये सभी दक्षताएँ एक दूसरे से जुड़ी हुई हैं।
- बच्चों को अपनी अभिव्यक्ति को बेहतर करने के लिए उपयुक्त सहयोग और फीडबैक दें। बच्चों को अच्छा लेखन क्या होता इसका नमूना भी समय-समय पर लिखकर दिखाएँ और चर्चा करें।
- कक्षा में बच्चों को उनके लेखन को साझा करने और चर्चा करने के अवसर भी प्रदान करने चाहिए।
- प्रारम्भिक कक्षाओं में लेखन के दोनों प्रकार महत्वपूर्ण हैं इसीलिए इन तीनों पर कक्षा में कार्य करना अति आवश्यक है|

खुला सत्र

सवाल और सुझाव